अमीर व मामूर के तअल्लुक की नौईयत

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

◈ बुखारी व मुस्लिम की रिवायत का खुलसा:- हज़रत इबने उमर (रदी) से रिवायत हे की रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की तुम मै से हर शख्स मुहाफिज़ (रक्षक) और निगराँ है और उस्से उन लोगों के बारे मै पूछ-ताछ होगी जो उस्की निगरानी मै दिए गये है, तो अमीर जो लोगों का निगराँ है उस्से उस्की रिआया के बारे मै पूछ-ताछ होगी, और मर्द अपने घर वालों (बीवी बच्चों) का निगराँ है तो उस्से उस्की प्रजा के बारे मै पूछ-ताछ होगी और बीवी अपने शौहर की औलाद की निगराँ है और उस्से औलाद के बारे मै पूछ-ताछ होगी. “निगराँ है” मतलब उन्की तबियत व सुधार का जिम्मेदार है ये उस्की जिम्मेदारी है की उन्को ठीक हालत मै रखे और बिगडने से बचाये, अगर उन्की तबियत और सुधार की तरफ ध्यान नहीं

देता है उन्को बिगडने के लिए छोड देता है तो उस्से अल्लाह तआला हिसाब के दिन पूछ-ताछ करेगा.

◈ बुखारी व मुस्लिम की रिवायत का खुलसा:- हज़रत मअकिल बिन यसार (रदी) से रिवायत हे की मैने रसूलुल्लाहﷺ को ये फरमाते हुए सुना की जो शख्स मुसलमानों की जमाअत का ज़िम्मेदार हो और वो उन्के साथ खयानत करे तो अल्लाह उस्पर जन्नत हराम कर देगा.

◈ तिबरानी किताबुल खिराज की रिवायत का खुलसा:- हज़रत मअकल बिन यसार (रदी) से रिवायत हे की मैने रसूलुल्लाहﷺ को ये फरमाते हुए सुना की जिस किसी शख्स ने मुसलमानों की जमाअत की ज़िम्मेदारी कुबूल की, फिर उसने उन्के साथ भलाई नहीं की और उन्के काम को करने के लिए अपने आपको उस तरह नहीं थकाया जिस तरह वो अपनी ज़ात के लिए अपने आपको थकाता है, तो अल्लाह तआला उस शख्स को मुंह के बल जहन्नम मै गिरा देगा. और इबने अब्बास रिवायत मै है, फिर उन्की हिफाज़त ऐसे तरीके

से नहीं की जिस तरीके से अपनी और अपने घर वालों की हिफाज़त करता था.

◈ किताबुल खिराज की रिवायत का खुलसा:- हज़रत यज़ीद बिन अबी सुफियान से रिवायत हे की जब हज़रत अबू बकर (रदी) ने मुझे सिपहसालार बना कर शाम की तरफ रवाना किया तो उस वकत ये नसीहत फरमाई, ऐ यज़ीद तुम्हारे कुछ रिश्तेदार है, हो सकता है की तुम उन्को जिम्मेदारियाँ सौंपने मै तर्जीह (महानता) दो, ये सब से बडा डर है जो मुझे तुम्हारी तरफ से है. रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की जो मुसलमानों के इजतिमाई मुआमलात का ज़िम्मेदार हो और वो मुसलमानों पर किसीको हुकूमत करने वाला बनाए सिर्फ रिश्तेदारी या दोस्ती की वजह से तो उस्के उपर अल्लाह की लानत होगी, अल्लाह उस्की तरफ से कोई फिदिया कुबूल नहीं करेगा. यहां तक की जहन्नम मे डाल देगा.

◈ किताबुल खिराज की रिवायत का खुलसा:- हज़रत असमा बिन्ते उमैस (रदी) से रिवायत हे की हज़रत अबू बकर

(रदी) ने हज़रत उमर (रदी) से फरमाया- की ऐ खत्ताब के बेटे! मैने मुसलमानों पर मुहब्बत की वजह से तुम्हें खलीफा चुना है, और तुम रसूलुल्लाहﷺ के साथ रह चुके हो तुम ने देखा है की आपﷺ किस तरह हम को अपने उपर और हमारे घर वालों को अपने घर वालों के उपर महानता देते थे, यहां तक की हम को जो कुछ भी आपकी तरफ से मिलता उस मै से जो कुछ बच जाता वो हम नबी के घर वालों को हदिया (भेंट) भेजा करते थे.

◈ किताबुल खिराज की रिवायत का खुलसा:- अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर बिन खत्ताब (रदी) ने (एक सभा मै जिस्मे प्रजा और हुकूमत के जिम्मेदार लोग मौजूद थे) तकरीर करते हुए फरमाया- ऐ लोगो! हमारा तुमपर हक है की हमारे पीछे हमारा भला चाहने वाला बनकर रहो और नेकी के कामों मै हमारी मदद करो (फिर फरमाया-) ऐ हुकूमत के ज़िम्मेदारो! अमीर की बुर्दबारी और उस्की नर्मी से ज़्यादा नफा देने वाली और अल्लाह को महबूब कोई और बुर्दबारी नहीं है. इसी तरह अमीर की जज़्बातियत और बेसलीका काम करने

से ज़्यादा नुकसानदेह और मबगज़ कोई और जज़्बातियत और बदसलीकगी नहीं है.

◈ बुखारी व मुस्लिम की रिवायत का खुलसा:- हज़रत इबने उमर (रदी) से रिवायत हे की रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की मुसलमानों को इजतिमाई मुआमलात के ज़िम्मेदार की बात सुननी और माननी ज़रूरी है, चाहे वो हुक्म आपको पसन्द हो या ना हो मगर जबकि वो अल्लाह की नाफरमानी करने का हुक्म ना हो, और जब उसे अल्लाह की नाफरमानी का हुक्म दिया जाए तो वो बात ना सुननी चाहिए ना माननी चाहिए.